जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, की स्थापना वर्ष 1964 में प्रदेश में कृषि एवं संबध्द विज्ञान में शिक्षा, अनुसंधान एवं विस्तार सेवाएं के लिये की गई है। वि.वि. में कुलपति, कुलसचिव, लेखानियंत्रक, अधिष्ठाता संकाय, संचालक शिक्षण, संचालक विस्तार सेवा एवं संचालक अनुसंधान सेवाये एवं अधिष्ठाता कृषि, के पद स्वीकृत हैं। विश्वविद्यालय के अधीन क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र, आंचलिक कृषि अनुसंधान केन्द्र एवं कृषि विज्ञान केन्द्र संचालित किये जा रहे है, जो कृषि शिक्षा, अनुसंधान एवं विस्तार का कार्य संपादित कर रहे हैं । कृषि एवं संबध्द विज्ञानों की उच्चस्तरीय शिक्षा एवं अनुसंधान केन्द्र के रूप में सेवायें देना तथा अनुशंसित प्रौधोगिकीय का कृषि, विस्तार कार्यकर्ताओं एवं विविध कृषि विकास कार्यक्रमों से जुडी विभिन्न संस्थाओं तक प्रसारित करना है।

कुलसचिव कार्यालय

न्यायालयीन प्रकरण

1. माननीय उच्च न्यायालय में वर्ष 2009 के दौरान दायर किये गये कुल प्रकरणों की संख्या .. **73**
2. माननीय उच्च न्यायालय में निर्णनीय प्रकरणों की संख्या .. **25**
3. माननीय उच्च न्यायालय द्वारा लंबित प्रकरणों की संख्या .. **48**

<u>समयमान वेतन के अंतर्गत वर्ष 2009–10 में निम्नलिखित संवर्ग लाभांवित हुये।</u>

1.	शीघ्रलेखक श्रेणी–III	–	07
2.	कनिष्ठ संगणक	–	07
3.	सहायक श्रेणी–III	–	73
4.	सहायक श्रेणी–II	–	41
5.	प्रयोगशाला तकनीशियन	–	05

क्रमोन्नति योजना के अंतर्गत वर्ष 2009–10 में निम्नलिखित संवर्ग लाभांवित हुये।

1.	चौकीदार	–	02
2.	केटल अटेंडेंट	–	12

3. मैसेंजर – 06

4. वेलदार – 01

5. पोल्ट्री अटेंडेंट – 03

6. प्लाऊमैंन – 02

7. माली – 03

8. मैट – 01

दैनिक वेतन भोगी श्रमिकों को विशेष भत्ता का लाभ प्रदान किया गया।

1. 20 वर्ष की सेवा पूर्ण होने पर रू. 1000/– – 315 श्रमिक ।

2. 10 वर्ष की सेवा पूर्ण होने पर रू. 500/– – 84 श्रमिक ।

लेखानियंत्रक कार्यालय

विश्वविद्यालय का वर्ष 2009–10 का प्रारंभिक शेष 1,20,26,962.00 से प्रारंभ हुआ था। राज्य शासन द्वारा वित्तीय वर्ष में समय पर अनुदान उपलब्ध कराने के कारण विश्वविद्यालय की आर्थिक स्थिति सामान्यतः संतोषप्रद है। शासन द्वारा वर्ष 2009–10 के माह मार्च 2010 तक निम्नानुसार अनुदान प्रावधान उपलब्ध कराया गया –

स.क्र.	लेखा शीर्ष	2009–10 के लिये प्रस्तावित राशि	मार्च 2010 तक स्वीकृत राशि
1.	कृषि आयोजनेत्तर	19,00,00,000	17,73,33,000
2.	अ– कृषि आयोजना	3,07,32,000	3,07,32,000
	ब– अधोसंरचना अनुदान गंजबसौदा	83,00,000	27,67,000
3.	आदिवासी उपयोजना	2,71,00,000	2,71,00,000
4.	विशेष घटक योजना	3,17,33,000	3,17,33,000
5.	पशुपालन आयोजनेत्तर	3,00,00,000	2,25,00,000
6.	पशुपालन आयोजना	1,20,00,000	90,00,000
	योग	**32,98,65,000**	**30,11,65,000**

संचालनालय अनुसंधान सेवाऐं

अनुसंधान :–फसलों की नई किस्में:

कृषि विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2009 की अवधि में विभन्न खद्यान्न फसलों की निम्नलिखित किस्में राज्य स्तर पर विमोचित की गई।

गेहूँ	जे. डब्लू.1202 , जे. डब्लू 3211
सोयाबीन :	जे.एस. 97–52
चना	जे. जी. 14 एवं जे. जी 6
मूँगफली	जे. जी. एच. 23
संकर धान	जे. आर. एच. 8
कोदों	जे. के. 8
कुटकी	जे. के. 36
सरसों	जे0 एम0 एम0 99
तिल	पी0 के0 डी0 एस0 12, पी0 के0 डी0 एस0 14 एवं टी0 के0 जी0 308
जौ	जे0 बी0 1
गन्ना	सी0 ओ0 जे0 एन0 86–800
धान	जे0 आर0 एच0 8
कुटकी	जे0 के0 36

नई स्वीकृत अनुसंधान परियोजनायें

वर्ष 2008–09 में विभन्न संस्थाओं से आर्थिक सहायता प्राप्त कृषि, कृषि अभियॉत्रिकी एवं पशुपालन एवं पशु चिकित्सा संकायों में रूपये 5 करोड 78 लाख रूपयों की. की कुल 08 अनुसंधान परियोजना प्रस्ताव स्वीकृत की गई। स्वीकृत अनुसंधान परियोजना का विवरण निम्नानुसार है।

क्र0	वित्तीय पोषित संस्था का नाम	संख्या	राशि (लाख रू0)
(1)	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली	03	337.51
(2)	भारत सरकार	02	61.05
(3)	मध्य प्रदेश शासन	01	100.00
(4)	इक्रीसेट, हैदराबाद	01	56.39
(5)	अन्य	01	23.10
	योग	08	578.05

मनोनयन, पुरस्कार एवं सम्मान

- डा0 एस0 एस0 तोमर, संचालक अनुसंधान सेवाओं एवं अधिष्ठाता कृषि संकाय, ज0 ने0 कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर को भारतीय मृदा विज्ञान समिति, नई दिल्ली के फैलो मनोनीत किया गया
- डा0 एस0 के0 राव0, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय, रीवा एवं संचालक प्रक्षेत्र, ज0 ने0 कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर को खद्यान्न किस्म सुधार /विकास, अनुसंधान एवं प्रजनक बीज उत्पादन में सराहनीय योगदान हेतु मध्यप्रदेश शासन के विज्ञान एवं प्राद्यौगिकी विभाग, भोपाल द्वारा प्रतिष्ठत कैलाशनाथ काटजू पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- संचालनालय अनुसंधान सेवाऐं के युवा वैज्ञानिक डा0 एस0 बी0 नाहतकर, वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि अर्थशास्त्र एवं प्रक्षेत्र प्रबंधन), भारतीय कृषि अर्थ ाास्त्र समिति के कार्यकारी समिति (एक्जीक्टिव बॉडी), मुम्बई के वर्ष 2010–11 एवं 2011–12 हेतु सदस्य चुने गये।
- डा0 एस0 बी0 नाहतकर, वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि अर्थशास्त्र एवं प्रक्षेत्र प्रबंधन), संचालनालय अनुसंधान सेवाऐं, को भारतीय कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान संगठन, नई दिल्ली कर कार्यकारी समिति (एक्जीक्टिव बॉडी), मुम्बई के वर्ष 2010–11 एवं 2011–12 हेतु सदस्य चुने गये।
- डा0 डी0 के0 मिश्रा, सह–संचालक अनुसंधान सेवाऐं (मुख्यालय), संचालनालय अनुसंधान सेवाऐं, ने विश्वविद्यालय आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, पौध प्रजनन एवं अनुवांशिकी विभाग, जबलपुर, का पदभार ग्रहण किया।

विदेश यात्रा

डा0 पी0 सी0 मिश्रा, प्रमुख वैज्ञानिक (पौध प्रजनन), ऑचलिक अनुसंधान केन्द्र, पवॉरखेड़ा सिमिट, मैक्सिकों में फिनोटिपिंग फॉर फिजियोलॉजीकल ट्रेट्स बेस्ड ब्रीडिंग विषय पर संगोष्ठी में विजिटिंग साइंटिस्ट के रूप भाग लिया

संचालनालय विस्तार सेवायें

1. राज्य में धान एवं सोयाबीन की उत्पादन वृद्धि हेतु एक विशेष कार्यक्रम गठित एवं संचालित किया गया है । विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों, महाविद्यालयों एवं अनुसंधान केन्द्रों द्वारा धान की 'श्री' विधि एवं सोयावान की मेड़–नाली पद्धति को किसानों तक पहुंचाया गया है ।
2. वर्षा जल संचयन हेतु विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों ने, किसानों एवं प्रक्षेत्र विस्तार अधिकारियों को प्रशिक्षित करने के लिए संसाधनों का विकास किया है । प्रक्षेत्र तालों का निर्माण एवं लघु सिंचाई सुविधा का विकास, 10 कृषि विज्ञान केन्द्रों नामतः दमोह, बैतूल, छिंदवाड़ा, मंडला, डिंडोरी, शहडोल, शाजापुर, उज्जैन, खंडवा एवं सिवनी में विकसित किया गया है । यह प्रदर्शन इकाईयां किसानों एवं प्रक्षेत्र विस्तार अधिकारियों के प्रशिक्षण में सफलता पूर्वक उपयोग की गयी।
3. एन.ए.आई.पी. के अंतर्गत, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से कृषक समुदाय की जीवन चर्या की सुरक्षा हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र – मंडला, टीकमगढ़, छतरपुर एवं बैतूल द्वारा विषेष कार्यक्रम संचालित किया गया ।

कृषि विज्ञान केन्द्र

विश्वविद्यालय के अंतर्गत विभिन्न जिलों छिंदवाड़ा, सीधी, शहडोल, सिवनी, टीकमगढ़, बालाघाट, बैतूल, पन्ना, डिंडोरी, रीवा, जबलपुर, होशंगाबाद, सागर, हरदा, दमोह, कटनी, छतरपुर, मंडला, उमरिया एवं नरसिंहपुर में कृषि विज्ञान केन्द्र संचालित हैं । ये केन्द्र जिलों की तकनीकी आवश्यकता को आंकते हैं, तकनीकी का पुनर्निधारण व मानकीकरण करते हैं ।

सिलसिलेवार कार्यक्रम खेतों में उत्तम तकनीकी का प्रदर्शन, कार्यालयीन तथा ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षण, ग्रामीणों को रोजगारोन्मुखी शिक्षण एवं प्रशिक्षण तथा कृषि से जुड़े पुरूषों व महिलाओं को प्रशिक्षण इत्यादि कृषि विज्ञान केन्द्रों की प्रमुख गतिविधियां हैं । इन सारे क्रियाकलापों का उद्‌देश्य उत्पादन क्षमता का पूरा उपयोग करना है । इसी तारतम्य में किसान मेलों का आयोजन तथा कृषि दिवस मनाने का भी क्रम जारी है ।

मध्यप्रदेश में देश की सर्वाधिक आदिवासी जनसंख्या रहती है । प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन, उन्नत प्रजातियों के उपयोग एवं सोयाबीन, केस्टर, तिलहन फसलों का उपयोग के मामलों में आदिवासी समूहों का भरपूर सहयोग रहा । कृषि विज्ञान केन्द्रों में आदिवासियों के सामाजिक व आर्थिक उत्थान के लिये असाधारण कार्य किये जा रहे हैं ।

मानव संसाधन विकास, कृषि की प्रगति में एक अहं भूमिका अदा करता है । वर्ष 2009–10 में 1633 प्रशिक्षणों के माध्यम से 37210 कृषक एवं कृषक महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया ।

ग्रामीण युवा वर्ग और शिक्षा में पिछड़े हुए युवाओं के लिये रोजगारोन्मुखी पाठ्‌यक्रम भी चलाये जाते हैं । वर्ष 2009–10 में 118 प्रशिक्षणों द्वारा 2610 प्रतिभागियों को आत्मनिर्भर बनाने का महत्वपूर्ण प्रयास किया गया ।

शासकीय सेवकों हेतु 145 प्रशिक्षण आयोजित किये गये । कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा विभिन्न संस्थाओं के 215 प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये, इनमें 5680 प्रभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया ।

प्रदर्शन

खरीफ 2009–10 में दलहन फसलों पर 237 कृषक परिवारों को शामिल कर 95 हेक्टेयर में प्रदर्शन आयोजित किये गये । रबी 2009–10 में दलहन फसलों पर 300 कृषक परिवारों को शामिल कर 120 हेक्टेयर में प्रदर्शन आयोजित किये गये । खरीफ 2009–10 में तिलहन फसलों पर 300 कृषक परिवारों को शामिल कर 120 हेक्टेयर में प्रदर्शन आयोजित किये गये । रबी 2009–10 में तिलहन फसलों पर 225 कृषक परिवारों को शामिल कर 90 हेक्टेयर में प्रदर्शन आयोजित किये गये।

दलहन व तिलहन के अलावा अन्य फसलों पर भी प्रदर्शन कुल 384 हेक्टेयर में किये गये, जिससे 1196 कृषक परिवारों ने लाभ उठाया । इन कृषकों में एक तिहाई कमजोर वर्ग के हैं । इस तरह उन्नत बीज, समन्वित कीट प्रबंधन, पोषक तत्वों का प्रबंधन, रोग प्रबंधन इतयादि को प्रदर्शन किया गया तथा इन तकनीकों की वर्तमान पद्धति पर श्रेष्ठता सिद्ध करने में सफलता हासिल की । इसके अतिरिक्त कपास फसलों पर उन्नत तकनीक पर 30 हेक्टेयर, एकीकृत कीट प्रबंधन पर 25 हेक्टेयर व प्रक्षेत्र यंत्र पर 150 हेक्टेयर क्षेत्रों पर प्रदर्शन आयोजित किये गए ।

तकनीकों का खेतों में परीक्षण

फसलों के संरक्षण व उपज संबंधी 266 विभिन्न विषयों पर जन भागीदारी के आधार पर कृषकों के खेतों पर उन्नत तकनीकों को उतारा गया ।

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र

कृषकों को उन्नत तकनीकों, उन्नत तकनीकों, उन्नत उपकरण इत्यादि की जानकारी एकल–वातायन से प्राप्त हो सके इस हेतु कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्रों की स्थापना हुई है । इसके लिये अलग से एक भवन में कृषि विशेषज्ञों की विभिन्न सेवायें लगातार उपलब्ध कराई गई है।

मुद्रण व इलेक्ट्रानिक माध्यमों का प्रयोग

''कृषि विश्व'' विश्वविद्यालय संचार केन्द्र में नियमित रूप से प्रकाशन किया जाता है । इस त्रैमासिक पत्रिका में तकनीकों का समावेश कर प्रस्तुत किया जाता हे जो कृषकों के बीच पसंद की जाती है इसके साथ ही अन्य विशेषांक, पत्रिकाऐं, बुलेटिन तथा पत्रकों का प्रकाशन भी किया जाता है । विशेषांकों में अन्न, दलहन, तिलहन, उद्यानिकी, पशुपालन, मुर्गीपालन, फल–फूल इत्यादि विषयों का समावेश होता है । वर्ष 2009–10 में ''कृषि विश्व'' एवं अन्य पत्रिकाओं के 30,000 से अधिक प्रतियां प्रकाशित हुई । सम सामयिक विषयों पर वैज्ञानिकों द्वारा लिखे नये कालम विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में भी प्रकाशित कराये जाते हैं।

प्रत्येक अनुसंधान केन्द्र तथा कृषि विज्ञान केन्द्र अपने–अपने क्षेत्र के लिये उपयोगी कृषि तकनीक को ''तकनीकी बुलेटिन'' के रूप में प्रकाशित करता है । आकाशवाणी केन्द्र रीवा, जबलपुर, छतरपुर, भोपाल द्वारा 160 कार्यक्रमों का प्रसारण वैज्ञानिकों के माध्यम से किया गया । दूरदर्शन का भी इस कार्य में महती सहयोग लिया गया । ई.टी.वी. तथा जबलपुर सिटी केबल के सहयोग से वैज्ञानिकों द्वारा 85 कार्यक्रम प्रसारित किये गये । भोपाल दूरदर्शन द्वारा 103 कार्यक्रमों का प्रसारण हुआ जिससे कृषकों, कृषि से जुड़े हुए कर्मचारियों, परीक्षकों, प्रबंधकों व अधिकारियों को लाभ पहुंचा।

किसान मेला व कृषक संगोष्ठी

किसान मेला व कृषक संगोष्ठियां प्रत्येक कृषि महाविद्यालय, अनुसंधान केन्द्र व कृषि विज्ञान केन्द्रों की नियमित गतिविधि हैं । 35 किसान मेला तथा प्रक्षेत्र–दिवस (विकासखण्ड से राज्य स्तर तक) विश्वविद्यालय ने आयोजित किये । किसान–वैज्ञानिक परिचर्चा इनकी विशिष्टता है, जिसका सीधा प्रभाव, राज्य में उद्यान–फसलों के प्रति किसान–समुदाय का आकर्षण के रूप में देखा गया ।

धान की सघन कृषि प्रणाली

राज्य में धनोत्पादन की अन्वेषित नवीन प्रौद्योगिकी को कृषि विज्ञान केन्द्रों में अंगीकृत किया है । धान की 'श्रीविधि' कम लागत (बीज, जल) के साथ अधिक उत्पादन देती है । कृषि विज्ञान केन्द्रों शहडोल, कटनी, सिवनी, रीवा, जबलपुर, उमरिया, बालाघाट, डिंडारी एवं मंडला ने व्यापक स्तर पर यह कार्यक्रम आरंभ किया है । इन कृषि विज्ञान केन्द्रों के द्वारा किसान समुदाय में इस प्रौद्योगिकी के प्रसार हेतु अनेक प्रविधियां प्रयुक्त की गई ।

जीविका सुरक्षा

इस हेतु एन.ए.आई.पी. द्वारा वित पोषित परियोजनाएं, कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं एन.जी.ओ. के द्वारा चार जिलों में चलाई गई । इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छतरपुर, टीकमगढ़, बैतूल एवं मंडला जिलों के लघु एवं सीमांत कृषकों में एकीकृत कृषि प्रणाली को बढ़ावा देना है । किसान की जनभागीदारी सक्रिय प्रतिभागिता एवं कृषक एवं आज के सम्मेलन को ध्यान में रखते हुए आवश्यकताधारित प्रौद्योगिकी उपलब्ध करायी गई ।

बीज–ग्राम कार्यक्रम

उन्नत बीज किसानों को उपलब्ध कराकर, उन्नत बीजों का उत्पादन करने का यह अनूठा कार्यक्रम 20 कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से चलाया गया । इस माध्यम से 9302 क्विंटल बीज का उत्पादन वर्ष 2009–10 में किया गया । इससे प्रदेश में बीज बदलने की प्रक्रिया व दर बढ़ाने में मदद मिलेगी ।

उन्नत पौध सामग्री

बैतूल, जबलपुर, दमोह, सागर, कटनी व छिंदवाड़ा कृषि विज्ञान केन्द्रों में उद्यानिकी फसलों हेतु उन्नत पौध सामग्री बनाने हेतु अधोसंरचना का निर्माण किया गया । इन केन्द्रों ने कार्य आरंभ कर दिया है तथा पौधें तैयार होना भी प्रारंभ हो गया है ।

टेक्नालॉजी पार्क की स्थापना एवं (क्राप कैफेटेरिया)

सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों पर टेक्नालॉजी पार्क की स्थापना एवं विभिन्न फसलों की 115 उन्नत प्रजातियों को रबी व खरीफ के मौसम में उगाकर दिखाया गया । यह प्रदर्शनी, किसानों को उन्नत किस्मों

के चुनाव उनकी उपज, उनमें आई लागत तथा उनकी उत्पादन तकनीक को समझने में अत्यंत सहायक सिद्ध हो रही है । 15000 से भी अधिक किसानों ने इन्हें देखा व समझा । वैज्ञानिकों को इन दर्शनी फसलों के बीज बैंक बनाने व खेतां में परीक्षण तथा प्रदर्शन हेतु उपयुक्त फसल प्रजातियों को चुनने में भी सहायता मिली ।

आदिवासी क्षेत्रों में फसल प्रजाति बदलना

छिंदवाड़ा, मंडला व डिंडोरी जैसे आदिवासी बाहुल्य जिलों में कम उपज इन जिलों में उन्नत बीज दोनों मौसम में उपलब्ध कराया गया । इसका गहरा प्रभाव इन क्षेत्रों की उपज पर देखा जा रहा है ।

कृषि विज्ञान केन्द्रों का राष्ट्रीय सम्मेलन

कृषि विज्ञान केन्द्रों की राष्ट्रीय सम्मेलन जो 6–8 नवम्बर 2009 को तमिलनाडू कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर में आयोजित था, विश्वविद्यालय ने विशिष्टता से भागीदारी की तथा विश्वविद्यालय की तकनीकों का भरपूर प्रदर्शन किया ।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की आंचलिक कार्यशाला

कृषि विज्ञान केन्द्रों की राष्ट्रीय सम्मेलन जो 24–27 नवम्बर 2009 को कृषि महाविद्यालय, बिलासपुर में आयोजित था, विश्वविद्यालय ने विशिष्टता से भागीदारी की तथा विश्वविद्यालय की तकनीकों का भरपूर प्रदर्शन किया । उप महानिदेशक (विस्तार), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा वि.वि. की उपलब्धियों पर प्रशंसा जाहिर करते हुए बधाई प्रेषित की गई ।

संचालक शिक्षण

1. नवीन पाठयक्रम प्रारम्भ :–

इस वर्ष चतुर्थ अधिष्ठाता कमेटी की अनुशंसा के अनुसार समस्त संकायों कृषि, कृषि अभियांत्रिकी एवं पशुचिकित्सा एवं पशुपालन में पी.जी. एवं पी.एच.डी. हेतु नवीन पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया ।

2. पुस्तकालय सुविधा उपलब्ध :–

छात्रों को नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तकें उपलब्ध कराई गई हैं, ताकि छात्रों को पाठ्यक्रमानुसार शिक्षण सामग्री मिल सके ।

3 दृश्य श्रव्य साधनों द्वारा पठन पाठन :–

स्नातक, स्नातकोत्तर एवं विद्यावाचस्पती (पी.एच.डी.) के छात्रों के पठन–पाठन हेतु प्रत्येक कक्षाओं एवं सेमीनार हाल में दृश्य श्राव्य साधन सुलभ कराए जा रहे हैं, ताकि छात्रों को नवीनतम तकनीक से पढ़ाया जा सके । विश्वविद्यालय के सभी परिसरों में ऐसी सुविधाएं विकसित की जा रही हैं ।

4. शैक्षणिक सत्रानुसार शिक्षण कार्य :–

वर्ष 2009–10 हेतु निर्धारित शैक्षणिक सत्रानुसार प्रवेश दे कर पढ़ाई एवं परीक्षाएं संचालित की जा रही हैं ।

5. नेशनल नालेज नेटवर्क सुविधा प्रारम्भ :–

भारत सरकार के सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा ज.ने.कृ.वि.वि. हेतु एक नेशनल नालेज नेट वर्क का नोड प्रदाय किया गया है इसके क्रियान्वयन से विश्वविद्यालय में उच्च गति से छात्रों एवं वैज्ञानिकों को इंटरनेट सुविधाएं प्रदान की जा सकेगी ।

संचालनालय प्रक्षेत्र

1. रबी प्रजनक बीज उत्पादन

क्रमांक	फसल	इन्डेंट	(उत्पादन क्विं.)
1.	गेहूँ	2159.00	7527.00
2.	जौ	15.0	15.00
3.	चना	2319.00	3584.35
4.	सरसों	0.0	301.28
5.	तेरिया	0.0	0.34
6.	रामतिल	5.4	6.56
7.	अलसी	0.0	16.50
8.	मसूर	47.0	60.00
9.	करडी	0.0	3.79
10.	बरसीम	20.0	58.20
11.	जई	20.0	57.00
12.	मूंगफली	0.0	8.00
13.	मटर	10.0	378.34
14.	मक्का	0.0	55.00
15.	गन्ना	0.0	1300.00
	योग	**4595.40**	**13371.36**

	गर्मी		
1	मूंग	0.0	34.00
2	उडद	0.0	34.0
3	सोयाबीन	0.0	20.0
	योग	**0.0**	**88.0**
	कुल योग	**3775.40**	**13547.36**

2. एन.ए.आईपी.–आई.सी.ए.आर. द्वारा एक परियोजना बिजनेस प्लानिंग एवं डेव्लपमेंट इकाई, ज.ने.कृ.वि.वि. जबलपुर को ढाई वर्ष के लिए 327.362 लाख रूपये की योजना पारित की गयी । यह परियोजना अक्टूबर 2009 से लागू हो चुकी है ।

3. कृ.वि.विद्यालय के 6 प्रमुख वैज्ञानिक द्वारा इक्रीसेट हैदराबाद में अरहर एवं मक्का का बीज उत्पादन कार्यक्रम एवं गुंटूर में रबी में मक्का एवं मिर्ची बीज उत्पादन कार्यक्रम का अनुभव 24–30 जनवरी 2010 के भ्रमण के दौरान प्राप्त किया ।

4. प्रशिक्षण कार्यक्रम

1. मेंगा सीड परियोजना के अंतर्गत रबी फसल की बीज उत्पादन धान एवं दलहनी तकनीकी पर जबलपुर, रीवा, टीकमगढ़, सागर में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं ।
2. धान उपरांत चना परियोजना के अंतर्गत चना की बीज उत्पादन तकनीकी पर जबलपुर, रीवा, सतना, दमोह में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं ।
3. माडन सीड सिस्टम परियोजना के अंतर्गत रबी फसलों की बीज उत्पादन तकनीकी पर जबलपुर, सागर, विदिशा में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं ।

कृषि संकाय

1. शैक्षणिक सत्र 2009–10 में विधार्थियो को प्रवेश (कृषि एवं उद्यानिकी महाविद्यालय)

जवाहरलाल नेहरु कृषि वि.वि. जबलपुर के विखण्डन के उपरान्त प्रदेश के दो कृषि वि.वि. हेतु क्रमशः जवाहरलाल नेहरु कृषि वि.वि. जबलपुर एवं राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि वि.वि ग्वालियर के सभी कृषि महाविद्यालय क्रमशः जबलपुर, रीवा, टीकमगढ़ एवं गंजबसौदा, तथा ग्वालियर, इन्दौर, सीहोर, खण्डवा एवं उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर हेतु सयुंक्त काउंसिलिंग का आयोजन मध्य प्रदेश शासन, किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, भोपाल के पत्र क्रमाकं बी–4/47/08/14–2 दिनांक 01.08. 2009 के आदेशानुसार जवाहरलाल नेहरु कृषि वि.वि. जबलपुर में दिनांक 21, 22 एवं 23 अगस्त 2009 को आयोजित किया गया। तथा पी.ए.टी. 2009 के प्रावीण्य सूची के आधार पर विद्यार्थियो को फ्री सीटों पर

प्रवेश दिया गया। इसके पश्चात वानिकी विभाग में काउंसिलिंग के द्वारा सीटें भरी गई। जवाहरलाल नेहरु कृषि वि.वि. जबलपुर के चार कृषि महाविद्यालय की 200 सीटों, वानिकी विभाग जबलपुर की 20 सीटों, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि वि.वि. ग्वालियर के चार कृषि महाविद्यालयों की 220 सीटों तथा उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर की 40 सीटों को प्रथम काउंसिलिंग के दौरान प्रावीण्य सूची के आधार पर भरा गया।

इसके पश्चात प्रथम काउंसिलिंग के दौरान रिक्त रह गई फ्री सीटों एवं पेमेट सीटों पर दिनांक 10 एवं 11 सितम्बर 2009 को द्वितीय काउंसिलिंग के माध्यम से प्रवेश दिया गया।

2. उद्यानिकी व्यावसायिक शिक्षण संस्थान,रनगुऑ,गढ़ाकोटा, जिला सागर में 2 वर्षीय उद्यानिकी डिप्लोमा पाठ्यक्रम सत्र 2009–10 में प्रवेश हेतु काउंसिलिंग

उद्यानिकी व्यावसायिक शिक्षण संस्थान, रनगुऑ, गढ़ाकोटा, जिला सागर में 2 वर्षीय उद्यानिकी डिप्लोमा पाठ्यक्रम 2008–2009 से प्रारंभ हो चुका है। सत्र 2009–10 में प्रवेश हेतु दिनांक 19/09/2009 को गढ़ाकोटा में काउंसिलिंग आयोजित की गई तथा बीज उत्पादन (25 सीट) एवं पौध शाला प्रबंधन (25 सीट) में (10+2) पाठ्यक्रम के आधार पर आवेदित विद्यार्थियों को मेरिट के आधार पर काउंसिलिंग के द्वारा प्रवेश दिया गया।

3. परीक्षायें

बी.एस.सी. कृषि/वानिकी की सभी कक्षाओं की सत्र 2009–2010 के प्रथम सेमेस्टर की सभी परीक्षाएं 23.01.2010 तक समाप्त हो चुकी हैं । तथा द्वितीय सेमेस्टर का शिक्षण कार्य दिनांक 07.02.2010 से प्रारम्भ हो चुका है।

कृषि अभियांत्रिकीय संकाय

1. मध्यप्रदेश जलवृत खंड पुर्नसंरचना परियोजना की रिव्यू वर्कशाप दिनांक 25–26 जून 2009 का आयोजित की गई, जिसमें 35 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। प्रतिभागी परियोजना के अंतर्गत आने वाले कृषि विज्ञान केंद्रों से इस वर्कशाप में अपने केन्द्रों द्वारा किये गये कार्यो को प्रस्तुत किये एवं आगामी दिशा निर्देश प्राप्त किये।

2. महाविद्यालय का स्थापना दिवस 27 जुलाई 2009 को महाविद्यालय के संस्थापक अधिष्ठाता प्रो0 एस0आर0व्ही0 आर्य की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के सभी पूर्व अधिष्ठाता शामिल हुये।

3. महाविद्यालय में पी0जी0 प्रोग्राम का संशोधित पाठ्यक्रम एम0टेक0 के नये बैच के आने के साथ ही दिनांक 11.08.2009 से लागू किया जा चुका है।

4. महाविद्यालय के सह–प्राध्यापक डा0 आर0के0 नेमा ने 'डाटा माइनिंग व जी आई एस का कृषि में डिसीजन सपोर्ट सिस्टम' पर आई.आई.एम. लखनऊ में दिनांक 31.08.2009 से 11.09.2009 तक आयोजित प्रशिक्षण में भाग लिया।

महाविद्यालय में सम्पन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम

अक्टूबर – 2009

1. वर्टीकल कनवेयर, रोटावेटर व ग्रास कटर का प्रदर्शन।
2. वायोमास पर आधारित स्टाव का फील्ड इवाल्यूशन्स।
3. खेतों में भू–जल रिचार्ज का अध्ययन।
4. महाविद्यालय के चार वैज्ञानिकों के नवम् विश्वविद्यालय दीक्षंत समारोह में भाग लिया।

नवम्वर – 2009

1. सिंधाडा कृषक के यहॉ भ्रमण
2. वायोमास पर आधारित स्टाव का फील्ड इवाल्यूशन्स।
3. खेतों में भू–जल रिचार्ज का अध्ययन।

दिसम्बर – 2009

1. मध्यप्रदेश जलवृत खंड पुनसंरचना परियोजना में 21.12.2009 से 12.12.2009 तक प्रशिक्षण।
2. खेतों मे भूजल रिचार्ज अध्ययन।

अधिष्ठाता छात्र कल्याण

विश्वविद्यालय में छात्र कल्याण से संबंधित विभिन्न गतिविधियों के सुचारू संचालन हेतु अधिष्ठाता छात्र कल्याण कार्यालय के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियां सतत् सम्पन्न होती हैं । विश्वविद्यालय के अंतर्गत समस्त महाविद्यालयों में सांस्कृतिक, साहित्यिक, खेल–कूद, एन.सी.सी., एन.एस.एस. के अनेकानेक कार्यक्रम संचालित होते हैं, इसके अतिरिक्त वि वविद्यालय से स्नातक एवं स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त छात्रों हेतु समय–समय पर **कैम्पस साक्षात्कार** का आयोजन एवं समग्र व्यक्तित्व विकास हेतु कौंसलिंग की व्यवस्था प्रदान की जाती है ।

प्रांगण साक्षात्कार "CAMPUS INTERVIEW & PLACEMENT CELL"

छात्रों हेतु कौंसलिंग एवं प्लेसमेंट सेल की स्थापना विश्वविद्यालय के समस्त 05 महाविद्यालयों में कार्यरत हैं । इन समस्त इकाईयों के माध्यम से छात्रों के बायोडेटा वि वविद्यालय स्तर पर कार्यरत प्लेसमेंट सेल में एकत्रित किये जाकर, जिन संस्थाओं को कृषि स्नातकों की आवश्यकता होती है, को प्रेषित

किये जाते हैं, साथ ही विभिन्न संस्थाओं को विश्वविद्यालय में **कैम्पस साक्षात्कार** आयोजित करने हेतु आमंत्रित किया जाता है, जिन्हें कृषि क्षेत्र में तकनीकी मानव संसाधन की आवश्यकता होती है । वस्तुतः विश्वविद्यालय स्तर पर कार्यरत प्लेसमेंट सेल संस्थाओं एवं कृषि स्नातकों के बीच एक सेतु का कार्य करता है ।

विगत एक वर्ष में दोनों संकाय के व्यक्तिगत तौर पर प्राप्त रोजगारों के अतिरिक्त 162 कृषि छात्रों का चयन कैम्पस साक्षात्कार` माध्यम से सम्पन्न हुआ है।

सांस्कृतिक गतिविधियां युवा महोत्सव

अंतर्महाविद्यालयीन सांस्कृतिक समारोह

एकादश अंतर्महाविद्यालयीन सांस्कृतिक समारोह युवा महोत्सव का आयोजन दिनांक 28–29 जनवरी 2010 को आयोजित किया गया, जिसमें वि ववविद्यालय के प्रदेश भर के 05 महाविद्यालयों के 110 प्रतिभागी छात्र–छात्राओं ने 18 विविध सांस्कृतिक स्पर्धाओं में भाग लेकर अपने कला–कौशल का प्रदर्शन किया ।

अंर्तविश्वविद्यालयीन सांस्कृतिक समारोह

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित राष्ट्र स्तर पर युवा महोत्सव फरवरी से 12 फरवरी 2010 को साम हींगिंग बाटम कृषि तकनीकी एवं विज्ञान संस्थान इलाहाबाद में सम्पन्न हुआ । इस प्रतियोगिता जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के कुल 22 छात्र–छात्राओं ने अपनी सांस्कृतिक कला का प्रदर्शन किया ।

अंतर महाविद्यालयीन क्रीड़ा प्रतियागिता

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय की अंतर्महाविद्यालयीन खेल–कूद प्रतियोगितायें दो चरणों में सम्पन्न हुई । प्रथम चरण में वालीबाल, खो–खो एवं कबड्‌डी की प्रतियोगितायें दिनांक 2–3 फरवरी 2010 को कृषि महाविद्यालय रीवा में संपन्न हुई जिसमें 04 महाविद्यालयों के 150 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया तथा इसके परिणाम इस प्रकार रहे वालीबाल में कृषि महाविद्यालय जबलपुर विजेता व कृषि महाविद्यालय टीकमगढ़ उप–विजेता व कबड्‌डी में कृषि महाविद्यालय रीवा विजेता व कृषि महाविद्यालय जबलपुर उप–विजेता एवं खो–खो में कृषि महाविद्यालय जबलपुर विजेता व कृषि महाविद्यालय टीकमगढ़ उप–विजेता रहा ।

द्वितीय चरण की प्रतियोगितायें 15–17 फरवरी 2010 को सम्पन्न होने जा रही हैं, जिसमें बेडमिन्टन, टेबिल–टेनिस, एथलेटिक्स, चेस व केरम की प्रतियोगितायें होंगी । इन प्रतियोगिताओं में 05 महाविद्यालयों के 200 छात्र–छात्राओं के भाग लेने की संभावना है ।

राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगी परीक्षा में सफलता

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा देश के समस्त कृषि वि ववविद्यालयों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु राष्ट्र स्तर पर प्रतियोगी परीक्षा आयोजित की जाती है । उक्त परीक्षा

में जवाहरलाल नेहरू कृषि वि वविद्यालय जबलपुर के अंतर्गत आने वाले दोनों संकायों के 20 छात्रों द्वारा उच्च शिक्षा हेतु राष्ट्र स्तर पर छात्रवृत्ति/स्थानन (प्लेसमेंट) प्राप्त किया है । राष्ट्रीय स्तर पर किसी एक शैक्षणिक संस्था से चयनित होने वाली यह संख्या उस संस्था के शैक्षणिक उत्कृष्टता को रेखांकित करती है ।

छात्रवृत्तियां

सत्र 2009–10 में विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों को निम्नलिखित छात्रवृत्तियां प्रदान की गईं –

1.	जूनियर रिसर्च फेलोशिप	–	06
2.	नेशनल टेलेन्ट छात्रवृत्ति	–	51
3.	मैरिट–कम–मीन्स छात्रवृत्ति	–	04
4.	मैरिट छात्रवृत्ति	–	122
		कुल	183

बिन्दु क्रमांक 1 से 3 तक की छात्रवृत्तियां भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करने पर उत्कृष्ट छात्र–छात्राओं को प्रदान की जाती है । बिन्दु क्रमांक 4 प्रथम वर्ष से अंतिम वर्ष तक अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को मैरिट के आधार पर विश्वविद्यालय द्वारा उत्कृष्ट 5 प्रतिशत छात्रों को प्रदान की जाती है । वर्ष 2009–10 में 183 छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्तियां प्रदान की गई हैं ।

ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव

इस कार्यक्रम के अंतर्गत छः माह की अवधि के लिये बी.एस.सी. कृषि एवं वानिकी के चतुर्थ वर्ष के 221 छात्र–छात्राओं को आंचलिक अनुसंधान केन्द्रों एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के मार्गदर्शन में स्थानीय कृषकों के प्रक्षेत्र पर कृषि के व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु पदस्थ किया गया ।

कर्मचारियों के हितार्थ संचालित प्रकल्प

औषधालय –

विश्वविद्यालय मुख्यालय परिसर में एक औषधालय है, जिसमें 2 महिला एवं 1 पुरूष चिकित्सक की अंशकालिक नियुक्ति है । वि.वि. के कर्मचारियों उनके परिजन एवं छात्र–छात्राओं को इस औषधालय द्वारा समुचित चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाती है ।

एन.एस.एस. (राष्ट्रीय सेवा योजना)

विश्वविद्यालय के अंतर्गत प्रत्येक महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की ईकाईयां कार्यरत है । प्रदेश का एकमात्र विश्वविद्यालय है जिसमें एन.एस.एस. एक विशय के रूप में पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग है । योजना के माध्यम से प्रत्येक इकाईयों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में 07 दिवसीय विशेष शिविर आयोजित किये गये । इन शिविरों में राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से कृषि तकनीक के हस्तांतरण हेतु विभिन्न आर्कषक एवं उल्लेखनीय कार्य संचालित किये गये । ग्रामीण क्षेत्रों में लगने वाले इन शिविरों में सम्पूर्ण प्रदेश में लगभग 500 छात्र–छात्राओं ने भाग लिय ।

एन.सी.सी.

1 एम.पी.बटालियन

- कृषि महाविद्यालय जबलपुर के 10 छात्र सैनिकों ने दिनांक 5–16 दिसम्बर 2009 को आयोजित राष्ट्रीय एकता शिविर में भाग लिया ।
- इस इकाई के 28 छात्रों ने एन.सी.सी. के बी एवं सी सर्टिफिकेट परीक्षा उत्तीर्ण की ।
- कृषि महाविद्यालय जबलपुर के एन.सी.सी. कैडेट श्री अजयराज सिंह चौहान ने भारतीय थल सेना में कमीशन प्राप्त कर लेफ्टीनेंट के पद पर नियुक्त हुये ।

2 एम.पी. गर्ल्स बटालियन

- कृषि विश्वविद्यालय की एन.सी.सी. की 2 एम.पी.गर्ल्स बटालियन की कैडेट असिता राठौर को कैम्प के दौरान बेस्ट कैडेट अवार्ड द्वारा सम्मानित किया गया ।
- एन.सी.सी. की 2 एम.पी. गर्ल्स बटालियन द्वारा ग्राम सुहागी में दिनांक 10.1.2010 को पल्स पोलियों अभियान आयोजित किया गया, जिसमें सभी कैडेटों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया ।

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग :–

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग ने इस वर्ष 380 विज्ञप्तियॉ समाचार पत्रों एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हेतु प्रकाशन एवं प्रसारण हेतु प्रेषित की गईं । इसी प्रकार विगत वर्षों की अपेक्षा इस बार 126 विभिन्न प्रकार के विज्ञापन समाचार पत्रों को प्रेषित किए गए । जो कि निर्माण शिक्षा और साक्षात्कार आदि से संबंधित थे ।

वर्ष में स्थानीय, प्रदेश तथा राष्ट्रीय स्तर के प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकारगण/प्रतिनिधि शामिल हुए ।

लोक सूचना का अधिकार :–

लोक सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के अंतर्गत विभाग में लोक सूचना अधिकारी के पास विभिन्न प्रकरण दर्ज किए गए । जिनका निराकरण समय पर किया गया ।

मान. मुख्यमंत्री शिकायत निवारण प्रकोष्ठ :–वर्ष 2009–10में कोई भी प्रकरण दर्ज नहीं हुआ ।